eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

वर्तमान परिपेक्ष में श्री अरविंद घोष की शैक्षिक विचारधारा का समीक्षात्मक अध्ययन

नीलम देवी[1] एवं डा0 अमित भारद्वाज[2]
[1]शोधार्थी, श्री वेंकेटेश्वर यूनिवर्सिटी गजरौला, उ0प्र0
[2]शोध पर्यवेक्षक, श्री वेंकेटेश्वर यूनिवर्सिटी गजरौला, उ0प्र0

Received: 20 July 2025 Accepted & Reviewed: 25 July 2025, Published: 31 July 2025

Abstract

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य अरविंद घोष के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना है। अरविंद घोष जी एक महान दश दार्शनिक और विचार वाले व्यक्ति थे। आज मैं वर्षों पहले दिए गए उनके शिक्षा पर विचार आज के समय में शिक्षा पर काफी प्रभाव पड़ा है। इसका मुख्य आधार शैक्षिक विचार तथा साहित्य है। अरविंद जी के बहुत से विचार आज वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अनुरूप है। उनके विचार के माध्यम से शिक्षा और सरल बनाया जा सकता है। प्रस्तुत शोध में आज की शिक्षा प्रणाली को सरल और बेहतर बनाने के लिए अरविंद जी की शिक्षा प्रदर्शन की आवश्यकता का अध्ययन किया गया है।

प्रमुख शब्द– वर्तमान परिपेक्ष, श्री अरविंद घोष, शिक्षा, विचारधारा, जीवन दर्शन

Introduction

व्यक्ति अपने जीवन दर्शन से दूसरे व्यक्तियों को प्रभावित करता है स्वामी विवेकानंद के समान ही अरविंद घोष जी ने अपने विचार दर्शन व शैक्षिक विचारों को व्यक्ति के जीवन में दर्शाया है। अरविंद घोष एक महान दर्शन शास्त्र के प्रणेता थे। वह शिक्षा को उन्नति के मन पर ले जाना चाहते थे उनका मानना था कि शिक्षा से सूचनाओं का एकत्र करना नहीं है सूचनाओं के आधार ज्ञान नहीं किया जा सकता वह कहते हैं कि शिक्षा एवं जीवित शिक्षा में नहीं जिसके द्वारा बच्चों की छिपी हुई शक्तियों का विकास होता है। उसे अपने जीवन दिमाग राष्ट्र की आत्मा एवं मानवता की आत्मा और मस्तिष्क से उचित संबंध जोड़ने में सहायक होता है। शारीरिक विकास के लिए शारीरिक शुद्धि होना जरूरी है तभी आध्यात्मिक विकास संभव है। आज वर्षों बाद उनकी शिक्षा का प्रभाव वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस तरह से हम कह सकते हैं कि उनके बहुत समय पहले से सुझाए गए शिक्षा के उद्देश्य आज की शिक्षा प्रणाली में विशेष रूप से अपनाएं जाए। जिसे देखते हुए हम कह सकते हैं उनके भविष्य के प्रति सोच बहुत ही सही थी। आज के युग में हमारी शिक्षा प्रणाली की जो गिरी हुई स्थिति है उसको दूर करने के लिए उसे महान विभूति द्वारा शिक्षा के मूल्यों को अपनाने की बहुत आवश्यकता है।

समस्या कथन – वर्तमान परिपेक्ष में श्री अरविंद घोष की शैक्षिक विचारधारा का समीक्षात्मक अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य– श्री अरविंद घोष के शिक्षक विचारों का अध्ययन करना। घोड़ी के शिक्षक विचारों का आज के समय शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना।

अध्ययन विधि– प्रस्तुत शोध में प्राथमिक और द्वितीय शोध में उपयोग किया गया है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

श्री अरविंद का शैक्षिक दर्शन– श्री अरविंद जी का मानना था कि जीव की आत्मा में ज्ञान सदा सोने की अवस्था में दिखाई नहीं देता है। शिक्षा का आधार अंत कारण है इसका मानना है की सच्ची और वास्तविक शिक्षा वह है जो मानव की अंदर छुपी हुई शक्ति को विकसित करती है। वह उसे पूर्ण रूप से प्रभावित होता है अतः करण के चार मुख्य अंग है जो इस प्रकार है। – चित्र, बुद्धि, मनस, ज्ञान

उनके अनुसार मानव की इन शक्तियों में विकास होता है। अतः शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि वह इन शक्तियों को विकसित कर सके केवल ज्ञान प्राप्त करना ही शिक्षा नहीं है सच्ची शिक्षा वही है जिसमें मानव का पूर्ण विकास करने की क्षमता हो।

शारीरिक विकास और शोध अरविंद घोष के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य– अरविंद घोष ने शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य शारीरिक पूर्ण विकास और शुद्ध है उन्होंने शारीरिक विकास पर जोर नहीं दिया अभी तो शारीरिक वृद्धि को महत्व दिया है।

ज्ञानेंद्रिय का प्रशिक्षण– अरविंद जी के शिक्षा का एक अहम हिस्सा ज्ञानेंद्रिय का प्रशिक्षण भी बताया गया है। उनका विकास तथा दृष्टि श्रवण घृणा और स्पष्ट स्वाद पांच ज्ञानेंद्रिय का ज्ञान व विकास तभी हो सकता है स्नायु चिंता तथा मन शुद्ध हो।

अरविंद घोष जी के पाठ्यक्रम– भौतिक विषयरू मातृभाषा एवं राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय महत्व अर्थशास्त्र गणित ज्ञान मनोविज्ञान गीता उपनिषद देश के धर्म एवं दर्शन। आध्यात्मिक जैसे भजन कीर्तन ज्ञान एवं योग विषय पाठ्यक्रम में पूर्ण रूप से सम्मिलित होना चाहिए।

प्राथमिक स्तर– मातृभाषा अंग्रेजी गणित सामाजिक अध्ययन एवं चित्रकला और खेलकूद व्यायाम भगवानी भजन कीर्तन यदि को प्राथमिक स्तर पर महत्वपूर्ण मानते थे।

माध्यमिक स्तर– मातृभाषा अंग्रेजी फ्रेंच साहित्य गणित भौतिक विज्ञान रसायन विज्ञान जीव विज्ञान इतिहास भूगोल समाजशास्त्र मनोविज्ञान आदि।

उच्च स्तर– अंग्रेजी साहित्य गणित इतिहास जीव विज्ञान समाजशास्त्र कृषि विज्ञान आदि।

श्री अरविंद जी सभी विषयों को रेटकर याद करने पर जोर नहीं देते थे उनके हिसाब से विद्यार्थी को सीखना चाहिए उनके शिक्षण वीडियो में मौलिकता थी वह मातृभाषा पर जोर देते थे अगर बच्चे को क्रिया के द्वारा सीखने का अवसर दिया जाता था तो इस बात की सच्चाई है कि बच्चों में काम करने की कामना की लगन बहुत होती थी इससे वह अपने भविष्य में उचित प्रकार से रोजी–रोटी ंकरके अच्छे से जीवन व्यतीत कर सकते हैं बालक के विकास में विद्यालय की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है अतः विद्यालय में इस प्रकार का वातावरण करना चाहिए जो बालक पढ़ने के लिए तैयार हो सके।

शिक्षा के अन्य पक्षः– नारी शिक्षा व समाज शिक्षा व चरित्र निर्माण जो कि आज के समय के अनुसार जरूरी है। शिक्षा के बिना देश की तरक्की नहीं हो सकती। इसे बढाने में इनका बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा की पूरी रूप रेखा तैयार की। नैतिकता और धर्म मे अरविंद जी की बहुत रूचि थी। इनका मत था धर्म के अभाव में मनुष्य अध्यात्मिक स्वरूप को नहीं पहचान सकता। अरविंद जी ने व्यवसाहिक शिक्षा को बढावा देने की बात कही। जो गलतियां आज की शिक्षा में है इनको दूर करने का प्रयास अरविंद जी के विचारों से किया जा सकता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

श्री अरविंद जी का जीवन दर्शनः– शिक्षा के द्वारा ही मानव का विकास होता है। शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल जानकारी देना मात्र नहीं होता है। अपितु बालक के मानसिक संस्कारों को परिस्कृत करना भी है। अतः अंत में शिक्षा संस्कार के रूप में रह जाता है, लेकिन वेदों में प्रधान अंग शिक्षा ही था इसी प्रकार उपनिषद काल में जो शिक्षा विकसित हुई उसका स्वरूप दार्शनिक अधिक था।

श्री अरविंद के शिक्षा दर्शन के समझने के लिए उनके दार्शनिक विचारां का अध्ययन करना आवश्यक है। श्री अरविंद दर्शन का सिद्धांत यह है कि जड़ और आत्मा दोनों ही सत्य हैं। दोनो में से हम किसी एक की अपेक्षा नहीं कर सकते। अरविंद कोई रहस्य वादी नहीं, वर्णन सुप्रसिद्ध शंकर ब्राडले के जोड़ के तार्किक तथा सुप्रसिद्ध दार्शनिक काण्ड और होगल के समान बुद्धि जीव भी थे।

निष्कर्षः– अरविंद घोष जी एक योगी और महान दार्शनिक विचार के राष्ट्रीय शिक्षा देना नहीं चाहते थे और देश को विकसित करने में अपना योगदान आज भी दे रहे हैं। पांडिचेरी अंतराष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र शाखायें देश विदेश में प्रचलित हैं। अरविंद जी द्वारा बताये गये शिक्षा के उददेश्य सही मार्ग पर ला सकते हैं। जोकि व्यक्ति के विकास के लिये आवश्यक हैं। इसी तथ्य में श्री अरविंद की महानता निहित है। उनका लक्ष्य मनुष्य को उसकी अंतरात्मा से जोड़ना, समाज के प्रति सहगता बनाना और भारतीय संस्कृति के अनुरूप उन्नत नागरिक तैयार करना है। श्री अरविंद के शिक्षा दर्शन द्वारा बालक का विकास करके देश का भविष्य बन सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. श्री अरविंद 19941 मानव चक्र पांडिचेरी श्री अरविंद आश्रम।
2. श्री अरविंद 1994 श्री अरविंद अपने विषय में पांडिचेरी।
3. श्री अरविंद नवजात 2001 दिव्या शरीर में जीवन पांडिचेरी श्री अरविंद सोसायटी।
4. योगी सुरेश चंद 2002 वार्षिक प्रस्तुति मेरठ श्री अरविंद समिति।
5. छोटे नारायण शर्मा 2002 श्री अरविंद संक्षिप्त जीवनी नई दिल्ली श्री नवीन वायरिंग मद्रासन फॉर्म।
6. कोकिला विद्यावती 2003 श्री अरविंद अध्ययन पांडिचेरी श्री अरविंद आश्रम प्रेम।
7. नेत्र कैसे के 2004 श्री अरविंद दर्शन की भूमिका पांडिचेरी श्री मीरा ट्रस्ट